सितम्बर २०१२

क़ीमत रु १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

शिकायत ? नहीं, "एडजस्ट"

अक्रम एक्सप्रेस

शिकायत ? नहीं, "एडजस्ट"

बालमित्रों,

पूरे दिन में हम औरों की कितनी शिकायतें करते होंगे? "ये लोग ऐसा करते हैं, उन लोगों को कुछ नहीं आता, ऐसा थोड़े ही करते हैं?", ऐसा तो कितना ही! अपने को जो मिलता है, जितना मिलता है और जैसा भी मिलता है, उसमें तो संतोष ही नहीं होता और परिणामस्वरूप शिकायतें भी बंद नहीं होतीं।

चलो, हम शिकायत करने के बजाय उन संयोगों में एडजस्ट होने का प्रयत्न करेंगे। लेकिन किस तरह?

शिकायत करने से कैसे परिणाम आते हैं और साथ ही साथ एडजस्ट होने में कितना फायदा है? इस अंक में इस विषय पर परम पूज्य दादाश्री की सुंदर समझ की बातें बताई गई हैं।

तो आईए, हम भी इस समझ को पकड़कर हमेशा के लिए शिकायतें करने से बचें।

-डिम्पल मेहता

अनुक्रमणिका

दादाजी कहते हैं...१

शिकायतों को "बाय-बाय"...२

यह तो नई ही बात !...६

एडजस्टमेन्ट का प्रताप...७

अपने आपका परीक्षण करके देखो...११

ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ...१२

चलो खेलें ...१४

मीठी यादें...१६

रक्षाबंधन और जन्माष्टमी फोटो...१७

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : ५
अखंड क्रमांक :५
सितम्बर २०१२

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
अहमदाबाद : (०७९) २७५४०४०८, २७५४३९७९

राजकोट त्रिमंदिर : ९२४२१११३९३
वडोदरा : (०२६५) २४१४१४२
मुंबई : ९३२३५२८९०१-०३
यु.एस.ए. : ७८५-२७१-०८६९
यु.के. : ०७९५६४७६२५३
Website: kids.dadabhagwan

Printed, Published and Owned by : Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printing Press:-
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५५० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डोलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

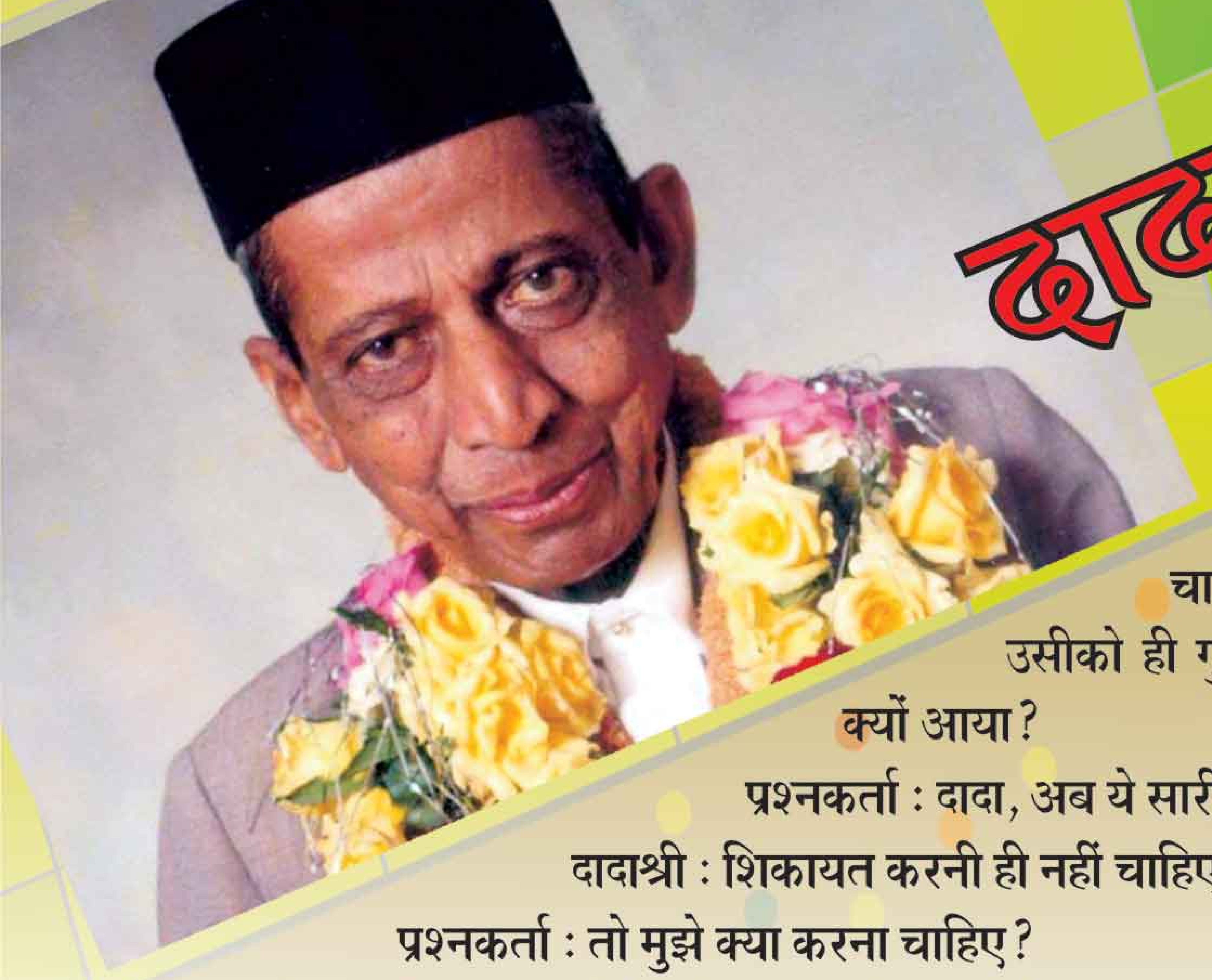

दादाजी कहते हैं

जो कोई भी प्राप्त संयोग आया, उसकी शिकायत न हो, इस तरह हल लाना चाहिए। किसीके विरूद्ध शिकायत नहीं करनी चाहिए। जो शिकायत करने आता है, मैं (दादाश्री) तो उसीको ही गुनहगार समझता हूँ। तुझे शिकायत करने का समय ही क्यों आया?

प्रश्नकर्ता : दादा, अब ये सारी शिकायतें कहाँ जाकर करें?

दादाश्री : शिकायत करनी ही नहीं चाहिए।

प्रश्नकर्ता : तो मुझे क्या करना चाहिए?

दादाश्री : अगर कोई व्यक्ति खराब है, मन में ऐसा गुणा हो गया हो, तो ऐसा कहना चाहिए कि, "वह तो बहुत अच्छा इन्सान हैं, हम ही गलत हैं।" ऐसे भागाकार कर देना चाहिए और यदि भागाकार हो गया हो तो गुणा कर देना चाहिए। जिसके साथ नहीं अच्छा लगे, वहाँ अपने अंदर की शक्ति को बढ़ाना है। जहाँ अच्छा लगता है, वहाँ तो शक्ति है ही। अच्छा नहीं लगता, यह तो कमज़ोरी है।

यदि रास्ते में जाते समय दीवार से टकरा जाएँ, तो उसे क्यों नहीं डाँटते? जो टकराते हैं, वे सभी दीवार ही हैं। गाय का पैर अपने पर पड़े, तो हम कुछ कहते हैं क्या? ऐसा ही इन सभी लोगों का है। ज्ञानीपुरुष सभी को किस तरह माफ़ कर देते हैं? वे समझते हैं कि ये बेचारे समझते नहीं, दीवार जैसे हैं। समझनेवाले को तो कहना ही नहीं पड़ता न! वे तो तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लेते हैं।

बैल जब नहीं चले तो उसे बड़ी लाठी से मारते हैं, ऐसा तुम ने देखा है? पीछे से कीलवाला होता है उससे मारते हैं। गूंगा पशु क्या करे? वह किससे शिकायत करे? अब इन्हें ऐसी मार क्यों खानी पड़ती है? क्योंकि पहले बहुत शिकायत की थी। उसका यह परिणाम आया है। जब उस दिन सत्ता में था(जब उसके हाथ में सत्ता थी), तब शिकायतें करता रहता था। अब सत्ता में नहीं है इसलिए शिकायत किए बिना ही रहना पड़ेगा, इसके बजाय तो शिकायत ही न करें तो अच्छा। पहले से ही "एडजस्ट" हो जाएँ तो क्या गलत है?

एडजस्ट होना ही धर्म है। एक बार हम (दादाश्री) नहाने गए तो प्याला ही रखना रह गया था। फिर हम ज्ञानी कैसे? एडजस्ट कर लेते हैं। जब पानी में हाथ डाला तो पानी बहुत गरम था, नल खोला तो टंकी खाली थी। फिर हम तो हथेली से पानी चुपड़-चुपड़कर ठंडा करके नहाए। हम किसीसे भी "यह लाओ या वह लाओ" ऐसा नहीं कहते। एडजस्ट हो जाते हैं। शिकायत न करे ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है मुझे, ऐसे व्यक्ति बनो, ऐसा कहना चाहता हूँ!

शिकायतों को "बाय-बाय"

"पुनीत" मम्मी ने रसोईघर में से आवाज़ दी। "बेटा, मेरी थोड़ी मदद कर। पापा घर आते ही होंगे।"

"ओह, मम्मी, मैं एक मज़ेदार वीडियो गेम खेल रहा हूँ, मुझे डिस्टर्ब मत करो।" पुनीत ने मम्मी को जवाब दिया।

"पुनीत वीडियो गेम तेरी राह देख सकता है। तेरी बहानेबाजी सुनने का मेरे पास समय नहीं है।" थोड़ा चिढ़कर मम्मी ने कहा। पुनीत मुँह बिगाड़कर रसोईघर में गया और बोला, "आप हर बार मुझे डिस्टर्ब करती हो।"

यह सुनकर मम्मी ने उसे समझाने की कोशिश की, "पुनीत तुझे मालूम है न कि, तेरी छोटी बहन राजवी को बुख़ार है?" तू शिकायत किए बिना मेरी थोड़ी मदद करेगा तो मुझे कितना अच्छा लगेगा!"

तभी दरवाज़े की घंटी बजी। "पापा आ गए!" कहकर पुनीत दरवाज़े की ओर दौड़ा। पापा के हाथ में से बेग लेकर पुनीत ने उन्हें पानी दिया। पानी पीते-पीते पापा ने पूछा, आज का दिन कैसा रहा पुनीत?" जैसे शिकायत करने का मौका मिल गया हो, ऐसे पुनीत ने बोलना शुरू किया, "बिल्कुल बेकार रहा। आज स्पोर्टस के पिरीयड के समय बारिश होने लगी, इसलिए क्लास में ही बैठे रहना पड़ा। बोर हो गए। बारिश भी समय देखे बिना शुरू हो जाती है।"

पुनीत की बात बीच में ही रोकते हुए पापा बोले,

"जिसका हल नहीं है उसकी शिकायत करने का क्या मतलब? बोर होने की जगह क्लास में बैठे-बैठे कुछ खेलना था न!" फिर ग्लास देते हुए कहा, "कोई बात नहीं, अब तो फ्रेश हो गया न?"

"क्या फ्रेश पापा!" कहकर, पुनीत ने शिकायत का सिलसिला जारी ही रखा, "शाम को फ्रेश होने के लिए वीडियो गेम खेलने बैठा तो मम्मी ने मुझे मदद के लिए बुला लिया।" वह आगे बोले ही जा रहा था कि, मम्मी ने सभी को खाना खाने के लिए बुला लिया।

"यह क्या? आज फिर खिचड़ी? मुझे खिचड़ी नहीं खानी।" टेबल पर बैठते ही पुनीत चिढ़कर बोला।

"बेटा, रविवार को ज़रूर तेरा मन पसंद खाना बना दूँगी। राजवी को बुखार आया है इसलिए आज खिचड़ी बनाई है।" मम्मी ने शांति से पुनीत से कहा। लेकिन मम्मी के समझाने पर भी पुनीत टस से मस नहीं हुआ। आख़िर में मम्मी ने उसे सैन्डविच बनाकर दिया, तभी उसने खाना खाया।

दूसरे दिन शनिवार था। शनिवार मतलब पुनीत के स्कूल की छुट्टी का दिन। करीब नौ बज़े होंगे। पापा डाइनिंग टेबिल पर चाय-नाश्ता करने बैठे थे, तब फिर पुनीत बड़बड़ाने लगा, "पापा देखो न, शनिवार को भी मम्मी मुझे जल्दी उठा देती है।"

पुनीत के पापा उसकी शिकायतों से बहुत तंग आ गए थे। पुनीत को इस आदत से किस तरह बाहर निकालें इस बारे में सोचते-सोचते उन्हें एक तरकीब सूझी। उन्होंने कहा, "पुनीत, तुझे मम्मी के लिए बहुत-सी शिकायतें रहतीं हैं न?"

अपना रक्षण करते हुए पुनीत बोला, "लेकिन मैं क्या करूँ? मम्मी करती ही ऐसा हैं! मुझे जो नहीं करना है, वही मुझे करने के लिए कहती हैं।"

चाय का कप टेबिल पर रखते हुए पापा बोले, "ठीक है, आज और कल मम्मी तुझे कुछ नहीं कहेगी। तुझे जो करना है, वह करने की छूट और इसी तरह मम्मी को भी जो करना है वह करने की छूट।"

१२ बज गए, १ बज बजा, २ बजे.... लेकिन मम्मी-पापा अभी भी नहीं आए।

"सच पापा?" पुनीत ने आश्चर्य से पूछा। पापा ने हँसकर हाँ कह दी।

जैसे कोई कैदी जेल में से छूटा हो वैसे पुनीत भागा। दस मिनट में तो उसने अपने चार-पाँच दोस्तों को फोन कर दिया और क्रिकेट खेलने का प्लान बना लिया। दोपहर के बारह बजे तक सब खेले। पुनीत के पेट में अब चूहे दौड़ने लगे। घर गया तो नाश्ते की खाली प्लेट्स ऐसे ही पड़ी थीं। यह देखकर पुनीत को अजीब लगा। देखा तो मम्मी बाहर बैठकर किताब पढ़ रही थीं।

"मम्मी, खाने में देर है?" पुनीत ने पूछा।

किताब रखते हुए मम्मी ने कहा, "मुझे खास भूख नहीं लगी, इसलिए आज मैंने खाना नहीं बनाया। फ्रिज में से लेकर तुझे जो खाना हो वह खा ले।" पुनीत ने फ्रिज खोला तो एक बड़ा केक दिखा। उसने मम्मी को ज़ोर से आवाज़ लगाई "मम्मी केक खाऊँ?" मम्मी ने शांति से कहा, "जितनी खानी हो उतनी खा। याद है न, आज और कल हमें जो करना हो, वह करने की छूट है।" पुनीत ने केक के तीन बड़े पीस खाए और ग्लास भरके दूध पिया। वह कमरे में गया तो उसका कमरा साफ नहीं हुआ था। कपड़े ऐसे-वैसे पड़े थे। उसकी किताबें बिखरी पड़ी थीं। हर रविवार को मम्मी उसे रूम साफ करने के लिए कहतीं, मगर आज तो मम्मी एक शब्द भी नहीं बोलीं। पुनीत को रूम साफ करने का मन नहीं हुआ।

"मम्मी मैं ईशान के घर खेलने जा रहा हूँ" ऐसा कहकर पुनीत बाहर दौड़ गया।

रात तक वह ईशान के घर खेला। घर आया तो उसे ऐसा था कि मम्मी ने कुछ अच्छा खाना बनाया होगा! लेकिन रसोईघर की हालत तो पहले जैसी ही थी। "मम्मी बहुत भूख लगी है, कब खाएँगे?" पुनीत ने पूछा।

"हमने तो खा लिया। आज निम्मी आंटी के घर पूजा और भोजन था।" मम्मी ने जवाब दिया।

"ओह!" ऐसा कहकर पुनीत ने गहरी साँस ली। फिर एक केक का पीस खाकर वह टी.वी. के सामने बैठ गया। टी.वी. देखने का उसे मन नहीं हुआ। आखिर में थककर वह सोने चला गया। लेकिन खाली पेट नींद कैसे आए? देर रात तक वह बिस्तर पर करवटें बदलता रहा।

सुबह पुनीत की आँख खुली, तब ग्यारह बज गए थे। आज तो किसी ने उसे उठाया ही नहीं। देखा तो घर में कोई था ही नहीं। फिर ख्याल आया कि, सब मंदिर गए होंगे हर रविवार को वह मंदिर न जाने के लिए बहाना बनाता था। "मंदिर जाने में अच्छा नहीं लगता" ऐसी शिकायत करता था। लेकिन आज मम्मी और पापा उसे छोड़कर चले गए, उसका उसे दुःख हुआ।

भूख से उसका पेट सिकुड़ रहा था। उसने खाने के लिए की हुई शिकायतें याद आने लगीं। उसे पश्चाताप होने लगा और साथ-साथ मम्मी कितने प्रेम से खाना बनाकर खिलाती थीं, उसकी क़ीमत उसे समझ में आ गई। उसने ग्लास भरकर दूध पिया और अपने रूम में गया। रूम अभी भी अस्त व्यस्त ही था। उसे समझ आ रहा था कि वह क्या करे? वह किताब लेकर पढ़ने बैठा, लेकिन मन नहीं लगा। उसे कहीं भी चैन नहीं पड़ रहा था। वह मम्मी-पापा का इन्तज़ार करने लगा। १२ बज गए, १ बज बजा, २ बजे.... लेकिन मम्मी-पापा अभी भी नहीं आए।

२.३० बजे उसे गाड़ी का हॉर्न सुनाई दिया। वह दौड़कर बाहर गया और मम्मी को देखकर

उनसे लिपट गया। "कितनी देर लगा दी, मैं कबसे आपका इन्तज़ार कर रहा था।"

"राजवी का मन किया इसलिए हम बाहर खाना खाने गए थे। बहुत अच्छा खाना था।" मम्मी ने देर से आने का कारण बताया।

"ओह", ऐसा कहकर पुनीत ने नीचे देखा। पुनीत को अब समझ में आ गया कि "जो करना हो, वह करने की छूट" ऐसे नियम में कुछ मज़ा नहीं है। मम्मी के विरुद्ध शिकायतें करने का फल भी उसे मिल गया था। मम्मी के सामने देखकर उसने धीरे से कहा, "आई एम सॉरी मम्मी! मैं सारे दिन शिकायतें करता रहता था। मुझे मेरी भूल समझ में आ गई है। आज से मैं सब काम शिकायत किए बिना करूँगा। सबसे पहले जाकर मैं अपना रूम साफ़ करूँगा। सच कहूँ तो मैं खुद ही गंदा रूम देखकर परेशान हो गया हूँ।"

मम्मी ने पुनीत के सिर पर प्रेम से हाथ रखकर कहा, "इससे पहले तेरे लिए एक सरप्राइज़ है। तेरे लिए हम पिज़्ज़ा और चॉकलेट आइसक्रीम लाए हैं।" यह सुनकर पुनीत एकदम मम्मी से लिपट गया, "ओ मम्मी, यू आर ग्रेट! ज़ोरदार भूख लगी है।

पिज़्ज़ा खाते-खाते पुनीत ने कहा, "पिज़्ज़ा हो या खिचड़ी, आज से शिकायतों को बाय-बाय!"

" आई एम सॉरी मम्मी! मैं सारे दिन शिकायतें करता रहता था। मुझे मेरी भूल समझ में आ गई है। "

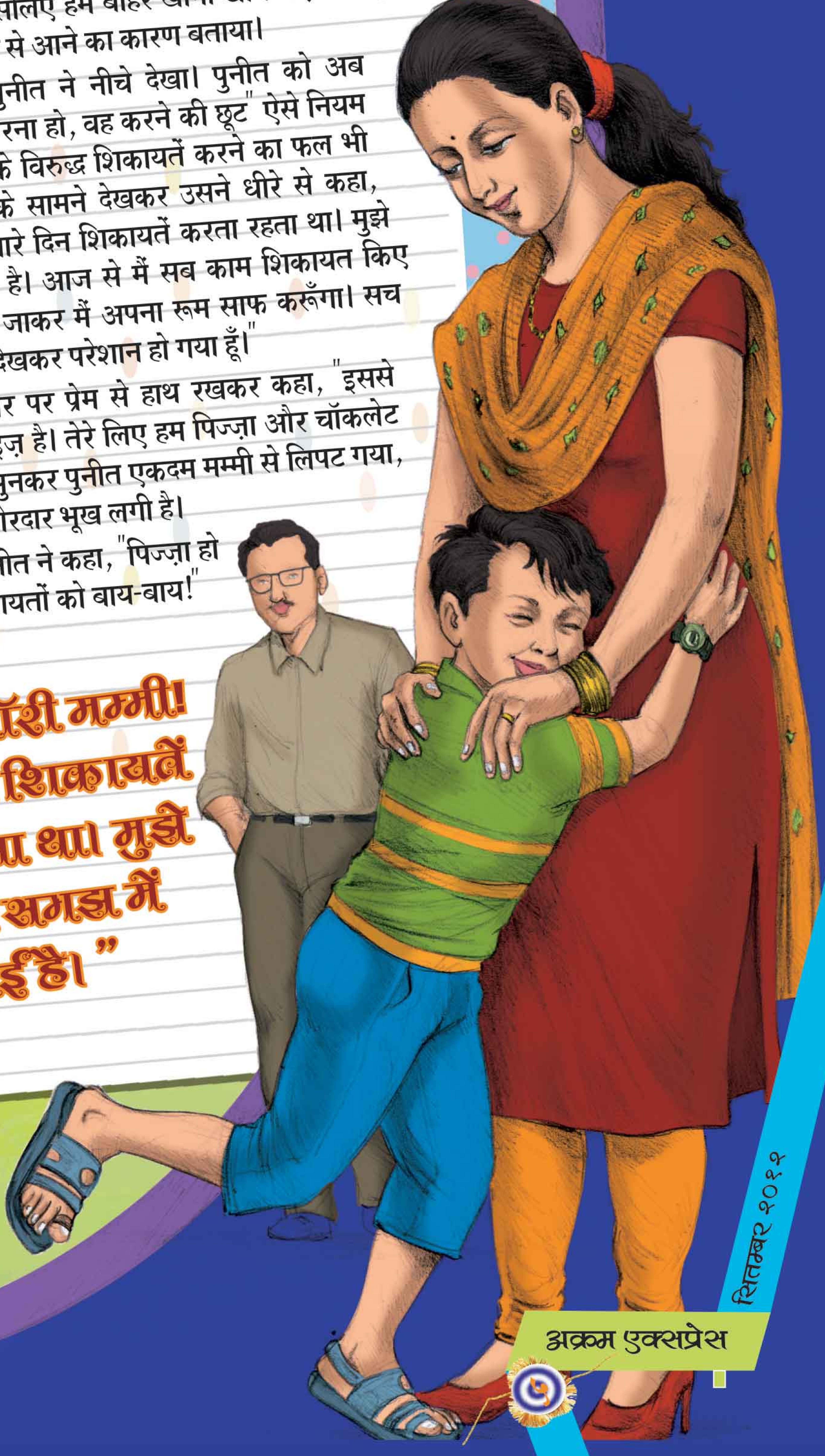

शिकायतें करने की जगह जितने एडजस्टमेन्ट लेंगे उतनी शक्तियाँ बढ़ेंगी और कमज़ोरियाँ टूट जाएँगी।

यह तो नई ही बात है

जो भी थाली में आए वह खा लेना, नहीं खाओगे, तो दो के साथ झगड़ा होगा। एक तो जिसने पकाया हो उसके साथ झंझट होगी, तिरस्कार होगा और दूसरा, खाने की चीज़ के साथ। खाने की चीज़ कहेगी कि, मैंने क्या गुनाह किया? मैं तेरे पास आई हूँ और तू मेरा अपमान क्यों कर रहा है? तुझे जितना ठीक लगे उतना ले, लेकिन मेरा अपमान मत करना।

एडजस्टमेन्ट का प्रताप

जब शाम को बच्चे घर आए, तब मम्मी को बुख़ार था।
चिन्टू बेटा, तेरे लिए थोड़ा पौहा बनाया है, वह खा लेना।
मम्मी, मुझे भी भूख लगी है।
दिखता नहीं है कि मुझे बुख़ार आया है? चिन्टू छोटा है इसलिए उसके लिए खाना बनाया है। तू तो अब बड़ा हो गया है, खुद ही बनाना सीख जा!
हाँ मम्मी, ठीक है, आप अपना ध्यान रखिए, मैं कुछ बनाकर खा लेता हूँ।
गौरव को खाना बनाना नहीं आता था। उसने मैगी नुडल्स बनाकर खा लिए।

दूसरे दिन सुबह,
मम्मी, अब मैं खाना बनाना सीख जाऊँगा, जिससे जब कभी यदि आपकी तबियत ठीक न हो, तब मैं सबके लिए खाना बना सकूँ। हर समय थोड़ी मैगी खाई जाती है?
और ऐसे गौरव केवल बारह साल की उम्र में खाना बनाना सीख गया। इतना ही नहीं, लेकिन उसे कपड़ा धोना, प्रेस करना, बर्तन धोना...सब आ गया।
कुछ सालों के बाद गौरव और चिन्टू ने हाईस्कूल में प्रवेश किया। हाईस्कूल दूसरे शहर में होने की वजह से दोनों को बोर्डिंग स्कूल में रखा।
एक महीने के बाद,
यह स्कूल है या जेल? जेल में भी इससे अच्छा खाना मिलता होगा! दाल तो कैसी पानी जैसी है और रोटी है या क्या? मुझे यहाँ अच्छा नहीं लगता। मुझे घर जाना है।
भाई, यह खाना तो बहुत अच्छा है। तुझे मालूम है, मैं जब खिचड़ी बनाना सीख रहा था, तब इससे भी खराब बनाता था।

नहीं, यह जेल जैसा स्कूल नहीं चलेगा। कैदी से भी ज्यादा मज़दूरी करवाते हैं। अपने आप कपड़े धोना, प्रेस करना और रोज़ सुबह जल्दी उठना। मैं तो तंग आ गया हूँ। कल ही पापा को फोन करके कहता हूँ कि मुझे यहाँ से ले जाइए।
एक बात कहूँ, अनुभव से कहता हूँ। शिकायत किए बिना तू जितना एडजस्टमेन्ट लेगा उतनी ही तेरी शक्तियाँ बढ़ेंगी, कमज़ोरियाँ टूट जाएगी। फिर तुझे शिकायत नहीं रहेगी। कोशिश करके देख।
हरगिज़ नहीं, मुझे तेरी यह लेक्चरबाज़ी नहीं सुननी।
और चिन्टू ने पापा को बुला लिया।
चिन्टू, इस स्कूल की पढ़ाई करेगा तो भविष्य में तुझे बहुत फायदा होगा।
पापा के बहुत समझाने पर भी चिन्टू बोर्डिंग स्कूल में पढ़ने के लिए तैयार नहीं हुआ।
गौरव को तो बोर्डिंग स्कूल से कोई शिकायत नहीं थी। एडजस्टमेन्ट लेना उसे आ गया था। वहाँ के प्रतिकूल संयोगों को अनुकूल बनाकर वह बहुत अच्छे नंबरों से पास हुआ और लॉ कॉलेज में एडमीशन लेकर एक सफल वकील बना।
दूसरी तरफ़, चिन्टू अपने घर के सिवाय दूसरी किसी भी जगह पर एडजस्ट न होने के कारण, साधारण पढ़ाई करके अपने ही शहर में एक साधारण क्लर्क की नौकरी की।

अपने आपका परीक्षण करके देखो

प्रतीक को उसके दोस्तों ने "मिस्टर शिकायती" का टाइटल(नाम) दिया था। यहाँ-वहाँ उसकी शिकायतें होती रहती थीं। पिछले साल स्कूल की तरफ़ से दो दिन के टूर पर सब माउन्ट आबू गए थे। नीचे दिए हुए प्रसंग में, इस टूर में प्रतीक द्वारा की हुई शिकायतें ए, बी, सी, डी के नाम से नीचे लाइन की गई हैं।

लगभग सात बजे बस चली, थोड़ी ही देर में बस में अंताक्षरी का खेल शुरू हुआ। "प्रतीक तू भी खेल", विनीत ने प्रतीक को इशारा करके बुलाया।

"ना" कहकर प्रतीक ने सिर हिलाया, "मुझे आईपॉड पर गाने सुनने हैं।"

मन में सोचने लगा, (ए) "किसीको गाना तो आता नहीं है। कितना हल्ला मचा रहे हैं!"

"किसीको गाना तो आता नहीं है। कितना हल्ला मचा रहे हैं!"

उतने में बस में तीन झटके लगे और बस पंक्चर हो गई। "रिपेयर होने में एक घंटा लगेगा।" ड्राइवर ने सबको बताया।

(बी) "ओह नो, एक घंटा? अब क्या करेंगे? इन्तज़ार करने में तो कितनी परेशानी होती है।" प्रतीक परेशान होकर बोला।

पंक्चर हो जाने के कारण बच्चों को लंच भी देर से मिला।

(सी) : "ये क्या? टीचर को कुछ भी मेनेज करना ही नहीं आता। कितनी देरी से लंच दिया है और ऊपर से एकदम ठंडा! मैं तो प्रिन्सिपल से शिकायत करूँगा।"

इस तरह प्रतीक का टूर शुरू हुआ, तब से उसने एक मिनट भी आनंद से नहीं बिताया। आबू में प्रतीक और विनीत एक ही कमरे में थे।

(डी) "बिल्कुल नहीं, उसके साथ तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा। मैं किसी दूसरे के साथ रूम शेयर करूँगा, इसके साथ तो बिल्कुल नहीं।" प्रतीक टीचर के पास रूम बदलने की माँग लेकर गया।

हमें भी कभी-कभार ऐसी शिकायतें होती ही रहती है। आज से ऐसी शिकायतों के साथ "एडजस्टमेन्ट" की कौन-सी समझ रखेंगे? हर एक शिकायत के सामने नीच दिए हुए योग्य एडजस्टमेन्ट की समझ लिखो।

१ जिसके साथ अच्छा नहीं लगता, वहीं शक्ति लगानी है। अच्छा लगता है वहाँ तो शक्ति है ही। अच्छा नहीं लगना कमज़ोरी है।

२ सबके साथ हिल-मिल जाना चाहिए।

३ जो परिस्थिति प्राप्त हुई, उसे स्वीकार कर, असुविधा में भी सुविधा देखनी चाहिए।

४ शिकायती बनेंगे तो आरोपी बनने का समय भी आएगा न! इसलिए एडजस्ट हो जाना चाहिए। जिस समय जो हुआ वही सही।

हा...हा...हा...ही...

बापू : शाक मार्केट में गए,
बापू : भाइ, टमाटर कितने के दिए?
सब्जीवाला : १० के ५००
बापू : अच्छा चलो, गिनने लगते हैं।

ही...

ही...

टीचर : रवि, पानी की संज्ञा क्या?
रवि : H I J K L M N O!!
टीचर : यह तुम क्या बोल रहे हो?
रवि : आपने ही तो कल कहा था, H टु(to) O!

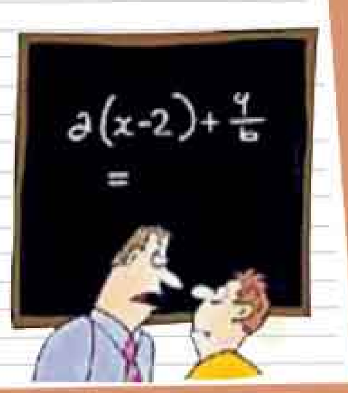

अपने आपका परीक्षण करके देखो उत्तर : (ए)-२, बी-३, सी-४, डी-१

ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ

सब्ज़ी ठीक बनी है या नहीं, यह पता लगाने के लिए उसने थोड़ी-सी चखकर देखी, तो वह ज़हर जैसी कड़वी लगी।

चंपानगरी में सोम, सोमदत्त और सोमभूति नाम के तीन धनाढ्य ब्राह्मण भाई रहते थे। उनमें सोम नामके बड़े भाई की नागश्री नाम की पत्नी थीं।

एक बार तीनों भाईयों ने मिलकर तय किया कि, तीनों का भोजन बारी-बारी से एक-दूसरे के घर बने और सभी एक ही जगह खाना खाएँ। यह बात सभी को योग्य लगी, वे बारी के अनुसार हर एक घर में खाना खाने लगे।

एक बार नागश्री के वहाँ खाने की बारी आई। उसने अनेक प्रकार का तड़का देकर बड़े तुंबडे की सब्ज़ी बनाई। सब्ज़ी ठीक बनी है या नहीं, यह पता लगाने के लिए उसने थोड़ी-सी चखकर देखी, तो वह ज़हर जैसी कड़वी लगी। इसलिए तुरंत ही दूसरी सब्ज़ी बना ली। तुंबडे की कड़वी सब्ज़ी के बारे में उसने किसीको नहीं बताया। इस तरह सब खाना खाकर अपने-अपने काम में लग गए।

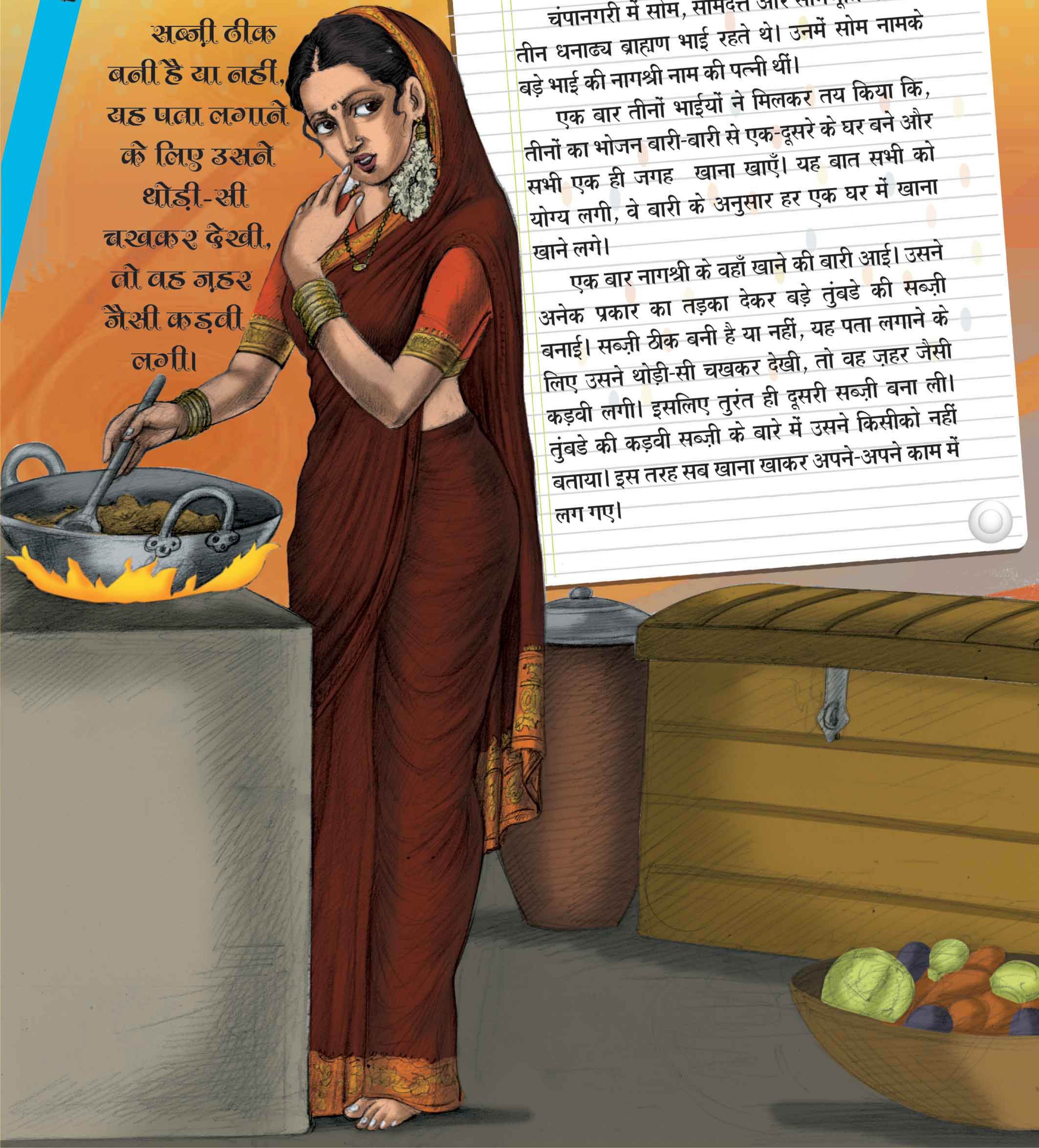

नगरी में उस समय धर्मघोष मुनि उनके पाँच सौ शिष्यों के साथ एक उद्यान में पधारे। उसमें से धर्मरुचि नामक एक शिष्य गुरु की आज्ञा लेकर भिक्षा के लिए चंपानगरी में गए। धर्मरुचि घूमते-घूमते नागश्री के घर पर आ गए। किसी भी तरह उसकी कलई (उससे कड़वी सब्ज़ी बन गई थी) खुल न जाए, इसलिए नागश्री ने कड़वे तुंबडे की सब्ज़ी धर्मरुचि को दे दी।

अपना पर्याप्त आहार मिल गया है, ऐसा समझकर धर्मरुचि कहीं और न जाकर, वे गुरु महाराज के पास आए। गुरुजी को वह सब्ज़ी देखकर शंका हुई। उन्होंने एक सींक सब्ज़ी में डुबोकर अपनी जीभ पर रखी तो, वह ज़हर जैसी लगी। इसलिए शिष्य को आज्ञा दी, कि "यह आहार तुम मत खाना और किसी निर्जीव जगह पर जाकर उसे डाल आओ।"

मुनि ने परीक्षा करने के लिए कुम्हार के भठ्ठे के पास जाकर सब्ज़ी की एक बूंद जमीन पर डाली। वहाँ तो असंख्य चींटियाँ उस बूंद की गंध से ही मरने लगी। इसलिए उन्होंने सोचा कि, यदि यह सब्ज़ी ज़मीन पर डाल दूँगा तो अनेक जीव मर जाएँगे। इसकी जगह अगर मैं अपने मेरे ही पेट में डालूँगा तो अनेक जीव बच जाएँगे। ऐसा सोचकर उन्होंने सारी सब्ज़ी खा ली।

थोड़ी ही देर में शरीर में वेदना उत्पन्न हुई। उस वेदना को शांत भाव से सहन करके वे देवगति में गए।

इस तरफ समय बीतते नागश्री को सोलह महारोग उत्पन्न हुए। उसकी महावेदना भुगतकर आयुष्य पूरा करके उसका जन्म नर्कगति में हुआ।

देखा मित्रों, अनेक जीवों की रक्षा करने का फल मुनि को कैसा मिला और अपनी गलती छिपाने के लिए नागश्री द्वारा किए हुऐ कपट का फल उसे कैसा मिला।

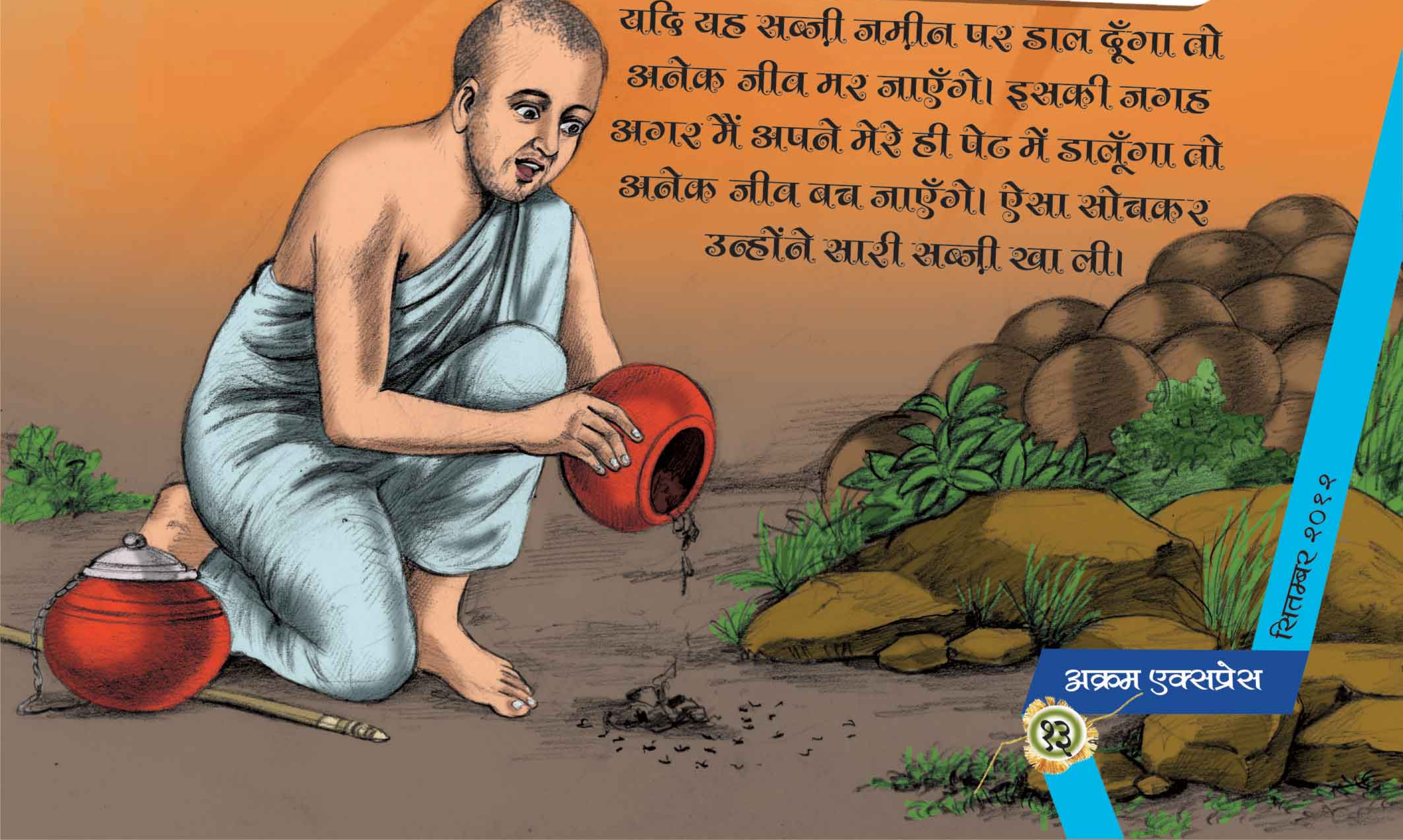

चलो खेलें...

१ नीचे की पहेली दिए संकेतों की मदद से हल करें।

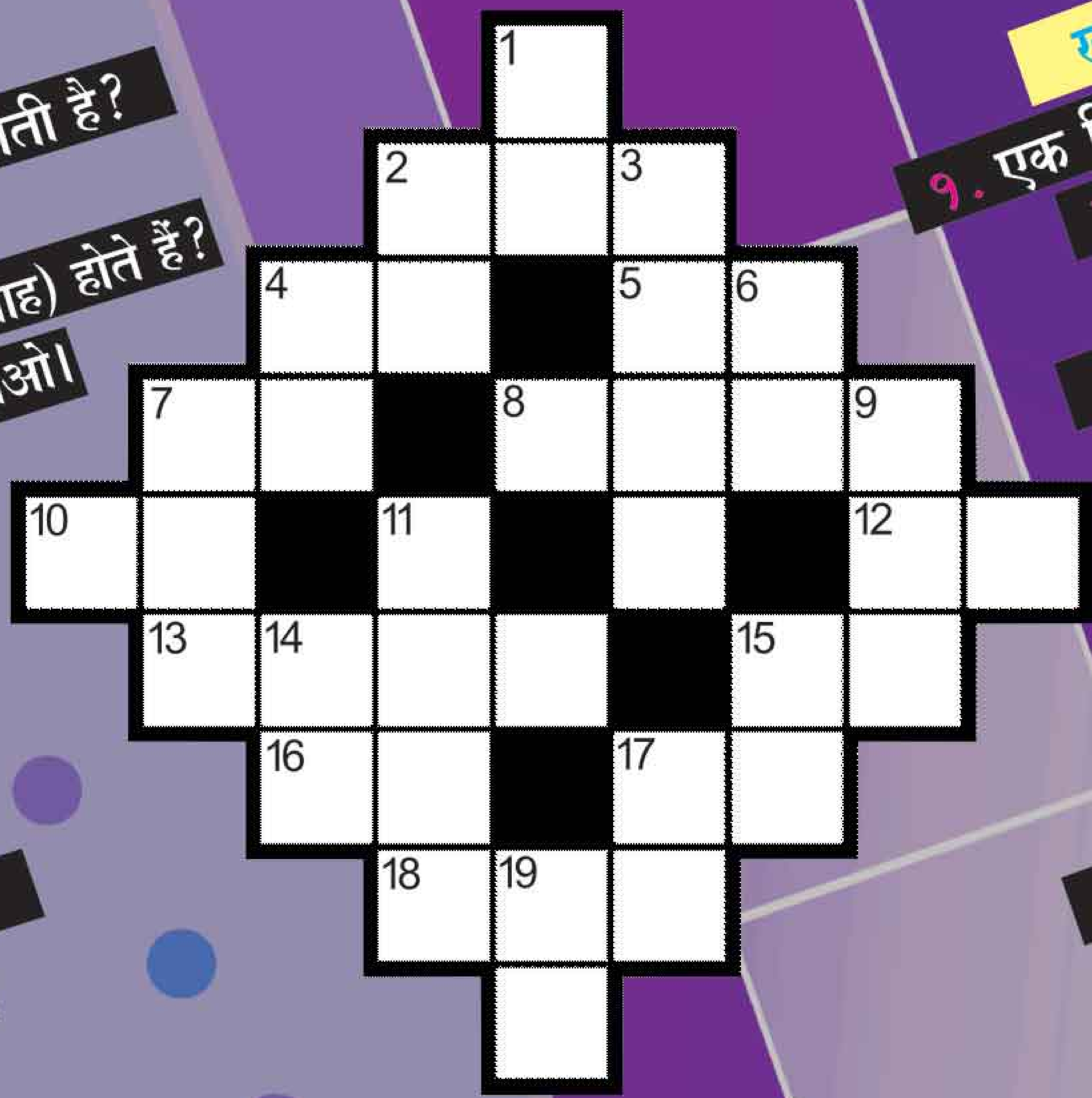

आड़े रास्ते

२. १२१*२
४. एक घंटे में कितनी मिनट होती है?
५. ८*११
७. एक साल में कितने हफ्ते (सप्ताह) होते हैं?
८. १, २, ३, ४, सही जगह लगाओ।
१०. एक डझन?
१२. ९*९
१३. ५३०८ का आधा।
१५. १७ खड़ी + १६
१६. २०४/३
१७. १५ खड़ी - २ खड़ी
१८. १३८८/२

खड़ी रास्ते

१. एक दिन में कितने घंटे होते हैं?
२. १९ खड़ी - १५ आड़ी।
३. ८५२४ को सेट करो
४. १८६/३
६. १६४ का आधा
७. १८ आड़ी - १७२
९. ४ आड़ी*३
११. ७९३*२
१४. ६*११
१५. १७ आड़ी + २ खड़ी
१७. ३*१८
१९. ९ खड़ी का आधा

२ इस चित्र को बाजु के खाने में दोरीए(बनाइए)।

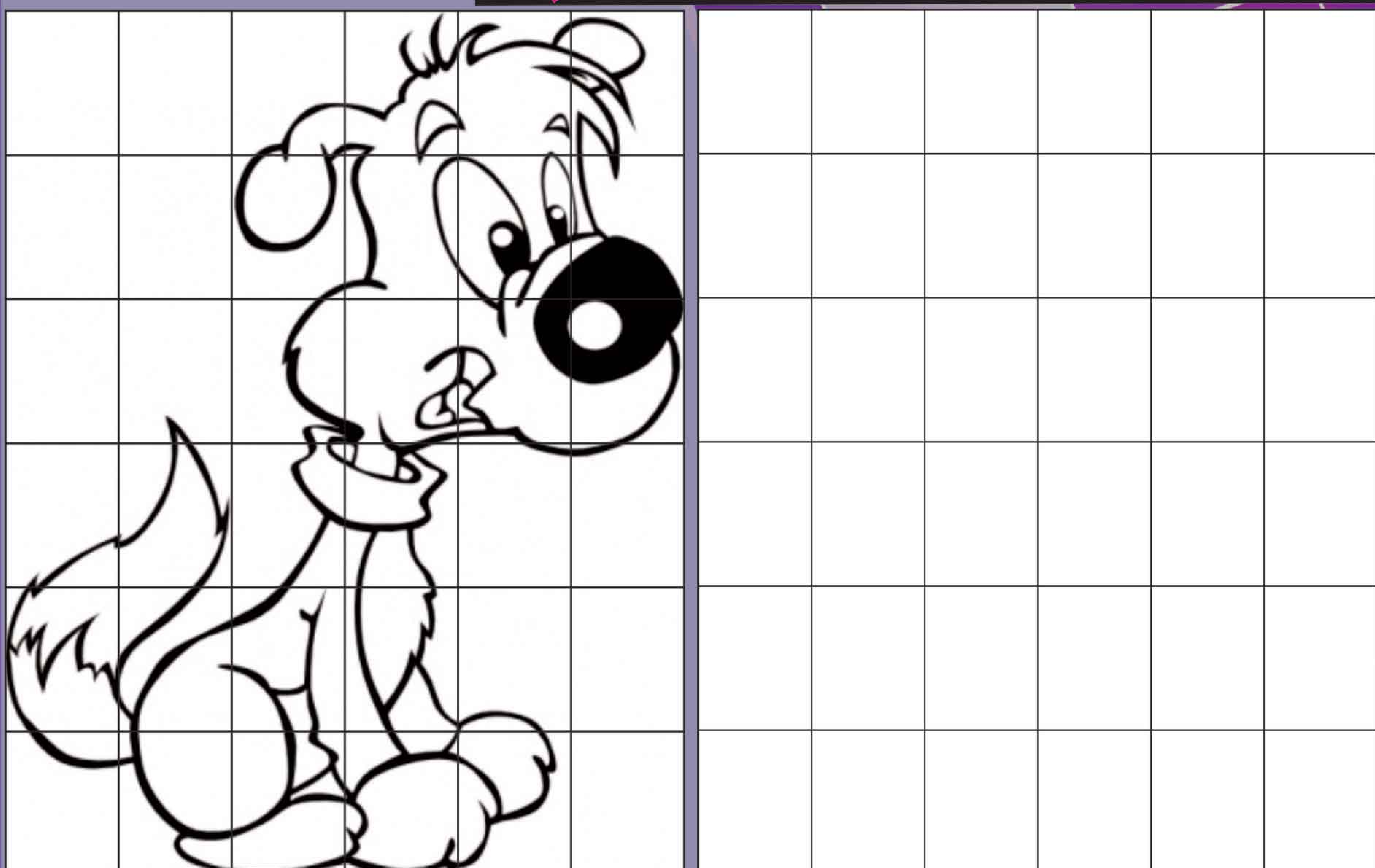

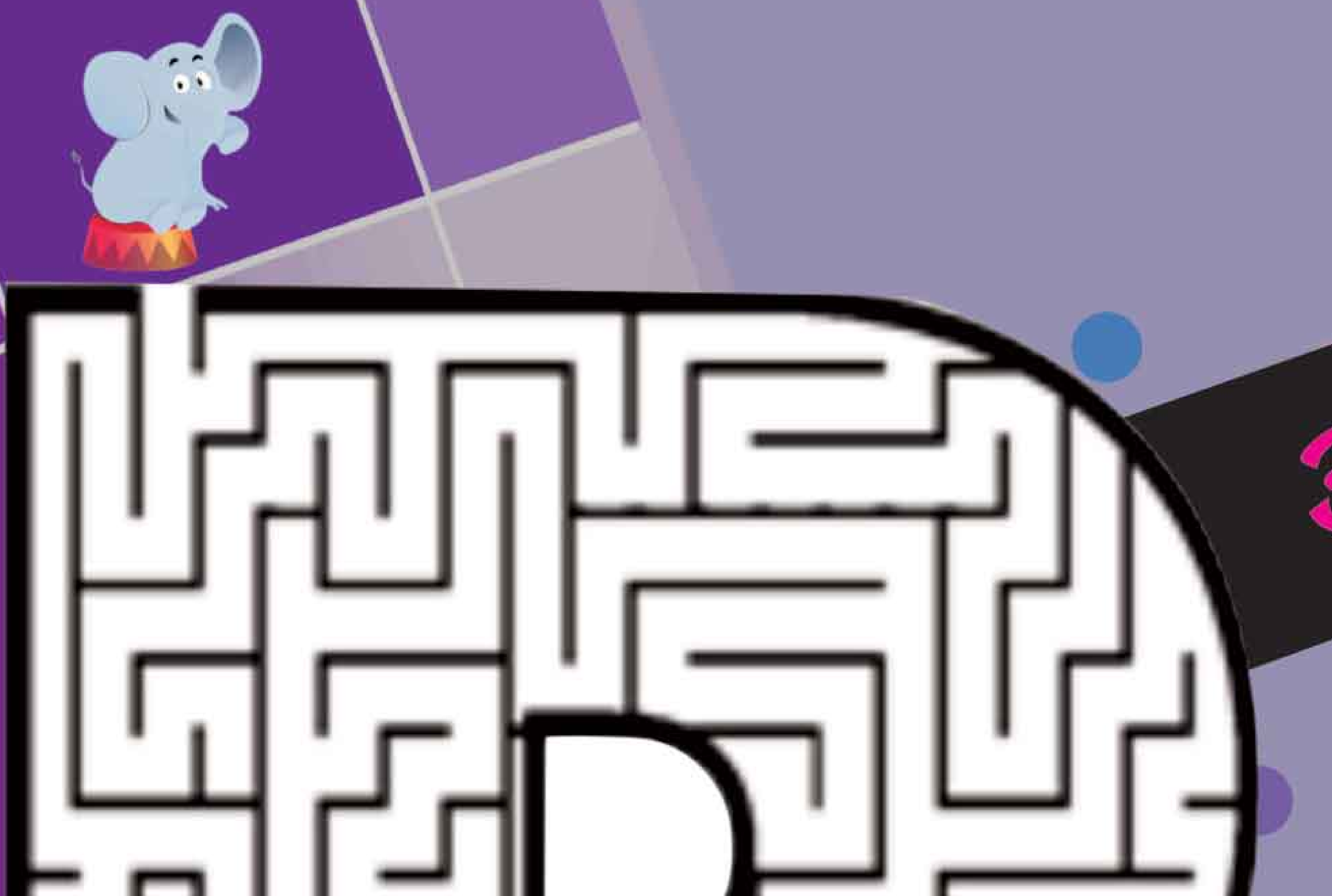

३ इस हाथी को केले खाने के लिए रास्ता ढूँढने में मदद करो।

४ नीचे ८ सिक्के से जो आकृति बनाई गई है, उनमें सिर्फ २ सिक्कों को उठाकर उल्टी आकृति बनानी है।

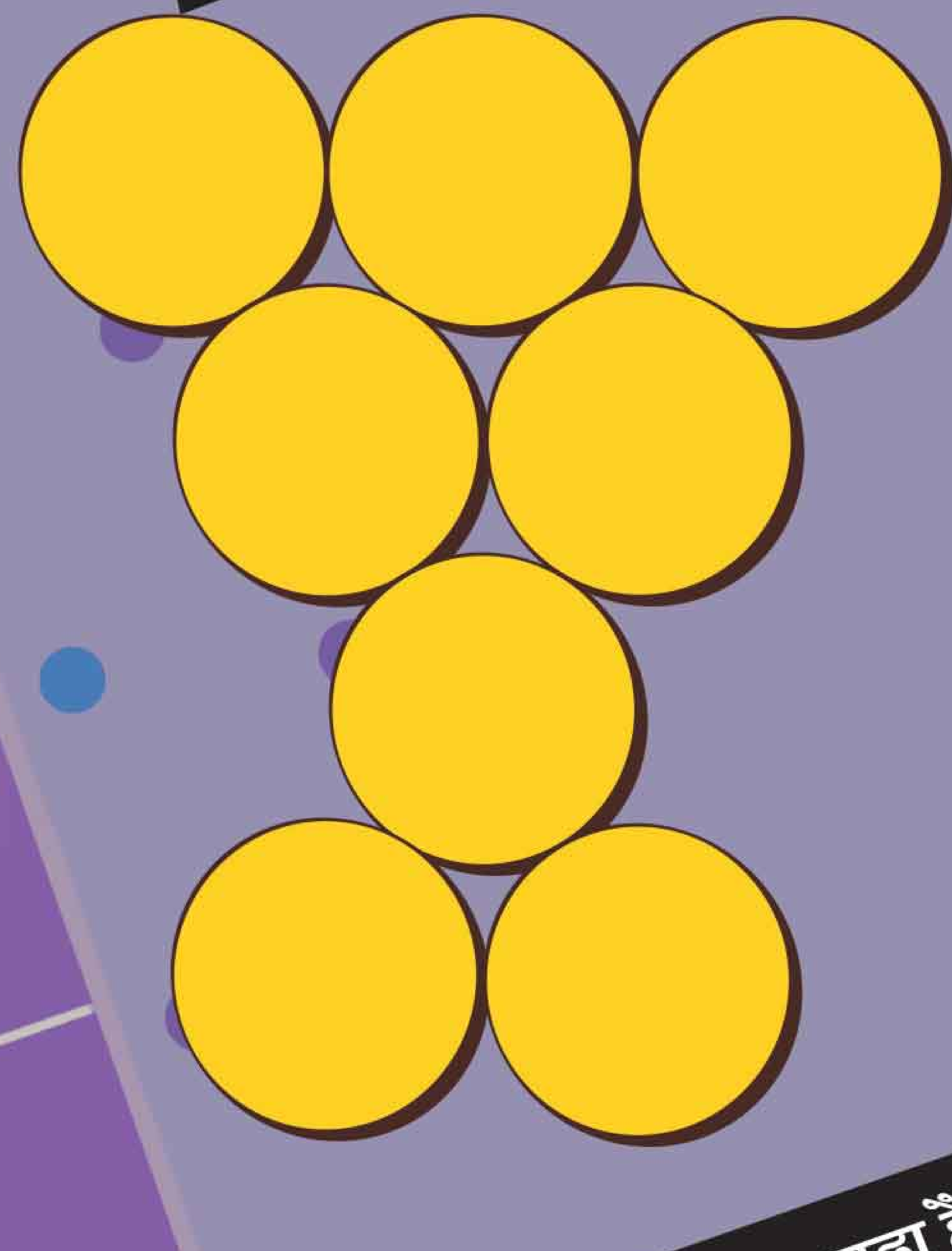

५ इस बोतल की कीमत उसके ढक्कन से एक रुपया ज्यादा है। दोनों कीमत यदि १.१० रुपये हो, तो फिर बोतल की कीमत कितनी होगी और ढक्कन की कीमत कितनी होगी...?

मीठी यादें

एक बार एक लड़की अपनी बर्थ-डे पर नीरू माँ के लिए, उसकी मम्मी से सुखड़ी बनवाकर ले गई। नीरु माँ को सुखड़ी देते हुए उसने कहा, "नीरु माँ आज मेरा जन्मदिन है। आपके लिए सुखड़ी लाई हूँ और ये ५०० रूपये श्री सीमंधर स्वामी के डोनेशन के लिए।"

नीरु माँ ने कहा,"मैं सुखड़ी भी नहीं लूँगी और ५०० रूपये भी नहीं लूँगी। ऐसी गंदी लड़की से मैं ये सब नहीं लूँगी।"

लड़की तो स्तब्ध रह गई। उसने कहा, मैंने क्या किया है नीरु माँ?

नीरु माँ ने कहा, "तू चुगली करती हैं, कपट करती हैं, सबसे खराब ढंग से बात करती है और तुझ से बहुत लोगों को दुःख भी होता है न?" उसने स्वीकार किया। नीरु माँ ने कहा, "तो फिर तू खराब लड़की ही कहलाएगी न!"

लड़की ने कहा, "हाँ, तो फिर मैं अब क्या करूँ, ताकि आप ये ले लें?"

नीरु माँ ने कहा, "आज से तू मुझे एक प्रोमिस दे कि तू किसीको परेशान नहीं करेगी, किसीकी चुगली नहीं करेगी और कपट नहीं करेगी।"

लड़की ने प्रोमिस देते हुऐ कहा, "हाँ, नीरु माँ, आपको जैसा चाहिए वैसी ही मैं बनूँगी।"

नीरु माँ ने हँसते-हँसते कहा, "हाँ, चल अब सुखड़ी खिला।"

सुखड़ी खिलाने के बाद उसने फिर से पूज्य नीरु माँ को ५०० रूपये का नोट दिया। नीरु माँ ने नोट हाथ में लिया उस पर "प्रोमिस डे" लिखकर उस दिन की तारीख लिखी और नीचे उनके साइन किए और वापस देते हुए कहा, "ले अब यह याद रखना, हर बर्थ डे के दिन यह नोट देखना और तेरा यह प्रोमिस याद करना।"

उस लड़की ने कहा, "हाँ नीरु माँ याद रखूँगी।"

देखा मित्रों, भूलों में से निकालने का नीरु माँ का कैसा अद्‌भुत तरीका था। बड़े की बड़े जैसी और छोटे की छोटे जैसी।

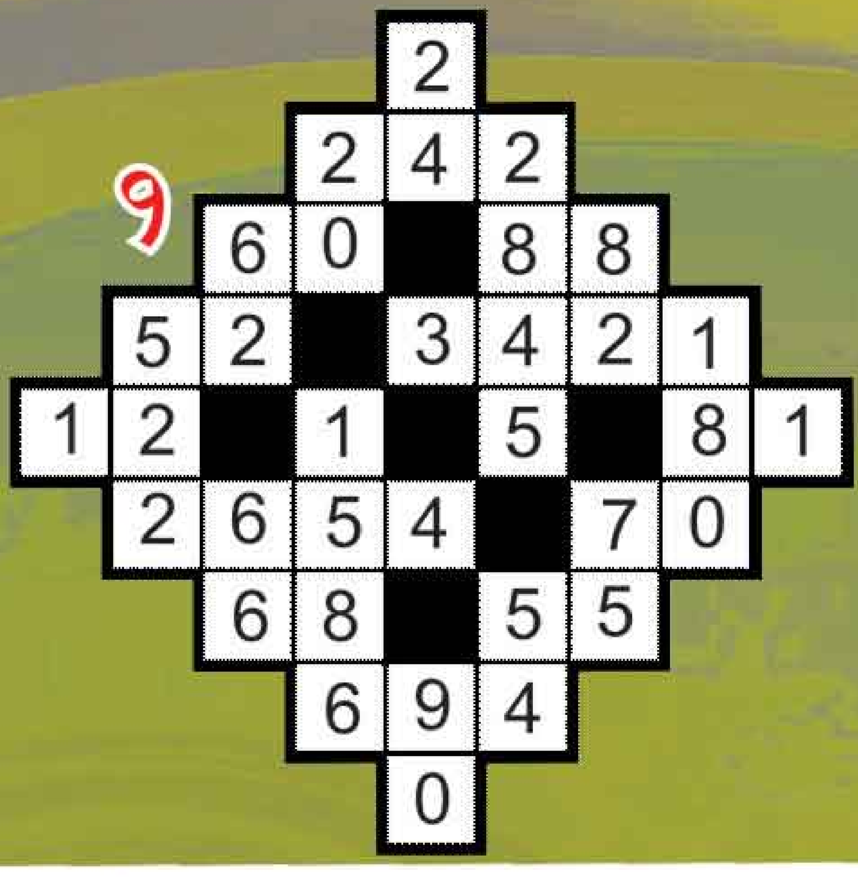

पहेलियो के जवाब

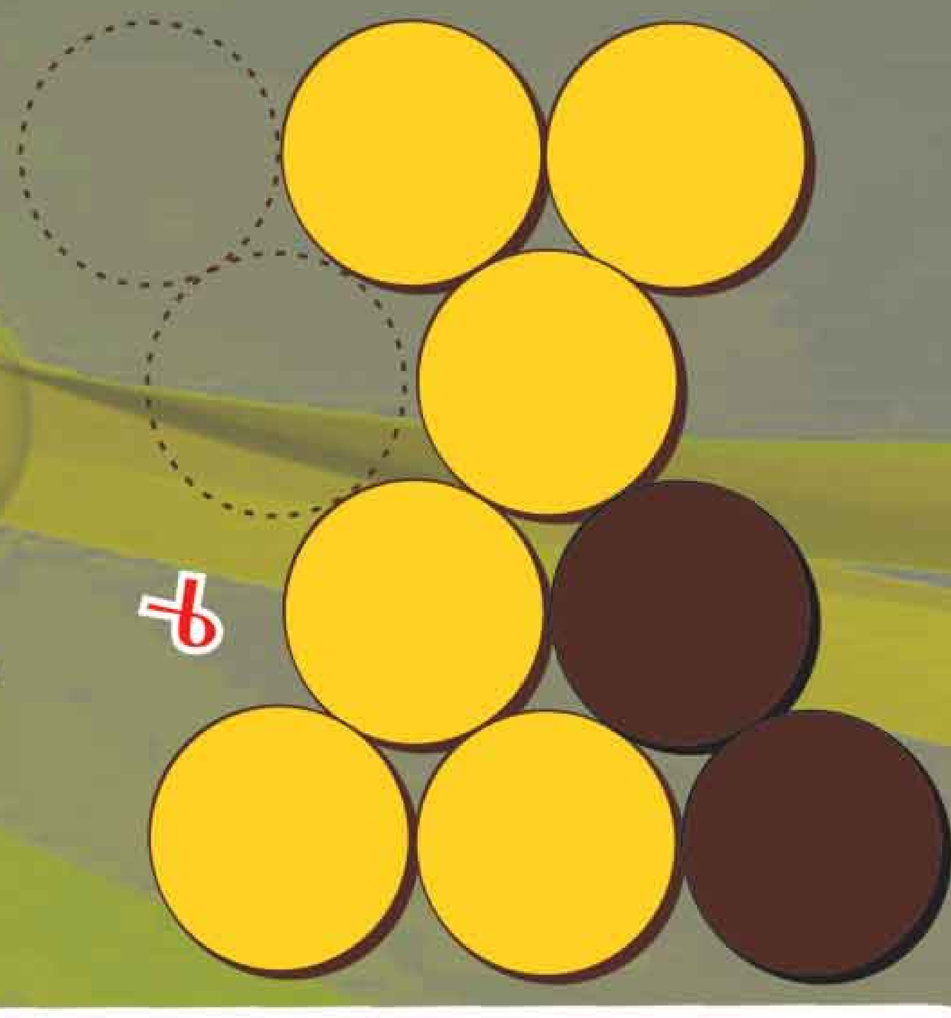

५ बोतल की कीमत १.०५ रुपया और ढक्कन की कीमत ५ पाइसा होगी।

खुशखबरी!! खुशखबरी!! खुशखबरी!!

अब किड्स वेबसाइट में भी ड्रोइंग कोम्पिटीशन... खास आपके लिए....

टोपिक : "मेरे प्रिय भगवान के साथ बिताया हुआ एक दिन।"

आपके चित्र में, आपने अपने प्रिय भगवान के साथ एक दिन किस तरह बिताया है, वह
वर्ना
आप अपने प्रिय भगवान का जन्मदिन किस तरह मनाओगे, यह चित्र बना सकते हो।

ज्यादा जानकारी के लिए आगे पढिए : http://kids.dadabhagwan.org

आपके चित्र हमें ३१ अक्तूबर तक भेज दीजिए। भाग लीजिए और इनाम पाइए...

रक्षाबंधन के दिन सीमंधर स्वामी को, परम पूज्य दादा भगवान को, पूज्य नीरू माँ को और योगेश्वर श्री कृष्ण भगवान को राखी बाँधते हुए पूज्य श्री

रक्षाबंधन

Akram Express

August 2012
Year : 1, Issue : 5
Conti. Issue No.: 5

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set-1
on 08th of every month

जन्माष्टमी

योगेश्वर श्री कृष्ण भगवान

रात के १२.०० बजे मटकी फोड़ते हुए पूज्य श्री

श्रीनाथजी भगवान को मक्खन खिलाते हुए पूज्य श्री

श्री कृष्ण भगवान पर फूलों की बौछार करते हुए पूज्य श्री

બાલકૃષ્ણની આરતી કરતા પૂજ્યશ્રી.

कृष्ण जन्म पर पपेट शो देखते हुए पूज्य श्री

पपेट शो टीम

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College,Usmanpura, Ahmedabad-14.